

06. दादी जी के महावाक्य



बाप से प्यार सभी का है लेकिन बाप समान बनना माना जैसे शिव बाप निराकार है और ब्रह्मा बाप ने भी अपने को आकारी से निराकारी बनाया ऐसे हम भी फॉलो कर समान बनें। इसके लिए एकान्त में विशेष टाइम देकर निराकारी स्थिति में रहने का अभ्यास करने की ज़रूरत है।

कई कहते हैं हम तो बाबा के हो गये, हमको तो बाबा सदा ही याद है लेकिन यह कोई याद की यात्रा नहीं है। हो गये, यह नशा ठीक है पर याद की यात्रा में रहने के लिए हमें विशेष सूक्ष्म से सूक्ष्म अपनी बीजरूप स्थिति में रहने की मेहनत करनी है।

बीजरूप स्थिति माना जिसमें कोई दूसरे संकल्प-विकल्प न हों। अशरीरी हो जायें। एकदम सूक्ष्म निराकारी बन जायें। बीज में सब समाया रहता है।

योग में भिन्न-भिन्न पुरुषार्थ करते हैं कि बाबा से रूहरिहान करें, मनन-चिंतन करें, यह भी अच्छी बात है लेकिन साथ-साथ अपनी ऊँची स्थिति

बनाने का लक्ष्य रखना है जो खुद को यह अनुभव हो कि बाबा के याद की इतनी मुझे शक्ति है जो इस याद में रहने से मेरे 63 जन्मों के विकर्मों का खाता क्लीयर, क्लीन हो रहा है।

अपना चार्ट देखो कि मैं कर्मातीत स्थिति के कितने समीप हूँ? आज मैं इसे चोले को बदलूँ तो मुझ आत्मा का कितना क्लीयर और क्लीन हिसाब है या अभी तक कोई दाग है? दाग होगा तो कर्मातीत कैसे बनेंगे? हमें अपनी स्थिति का चार्ट चैक करना है कि कौन-सा दाग अभी रहा हुआ है?

जब समय की गति इतनी तेज जा रही है तो समय की गति अनुसार हमारे पुरुषार्थ की गति भी इतनी तेज जा रही है? इस स्थिति में रहने से जो पुराने संस्कार हैं, कमियाँ हैं वह सहज परिवर्तन हो जाते हैं।

अच्छा, ओम् शांति।